श्री पार्श्वनाथ पूजा

(डॉ. वीरसागर जैन)

(स्थापना)

जिस मन में बसते आज तक, परद्रव्य और विभाव थे ।
उस मन में हे प्रभु ! आपको, पधरा रहा हूँ भाव से ।।

अब आइये, बस जाइये, मम राग-द्वेष भगाइये ।

अरु मुक्तिपथ में कदम मेरे, द्रुत गति से बढाइये ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् |
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः |
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् |

(अष्टक)

प्रकृति तीर्थंकर बँधे वह, भाव भी जब मलिन है।

तब अशुभ की क्या बात, वह तो मलिन से भी मलिन है।

स्वच्छ निर्मल नीर तो बस, वीतरागी भाव है ।

अतएव निर्मल जल चढ़ाता, हूँ प्रभो मैं आपको ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा |

लोक में चन्दन-विटप हैं, विपुल मात्रा में खड़े ।

पर आज तक क्या आत्मा को, शांत शीतल कर सके।

छोड़ो उन्हें! छोड़ो उन्हें !! वे, शान्ति दे सकते नहीं।

चैतन्य-चन्दन लेप कर लो, शांति मिलती है सही ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा |

संयोग तो क्षय होएंगे ही, आत्मा अक्षय महा ।

भवचक्र में पिसकर भी देखो, यह अमर ही रह रहा ।

संयोग को जो देखता, क्षण-क्षण में क्षय वह होयेगा ।

अक्षय अमर होगा वही जो, निज को निज में खोएगा ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा |

यह कामभाव अनिष्टकारी, है जलाता जगत को ।
इससे बचो! इससे बचो!! देखो सदा निज आत्म को ।
कृतकृत्य है यह तत्त्व इसमें, कामना की बात क्या ?
निष्काम चेतन तत्त्व को, परद्रव्य की दरकार क्या ?

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा |

भूख भोजन से कभी, मिटती नहीं क्या खाइए ।
भूख से बचना हो गर तो, रागभाव निवारिये ।
परद्रव्य को खाया नहीं है, आज तक इक जीव ने।
खा रहे निज राग ही सब, यह कहा जिनदेव ने।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा |

जीव जाने ज्ञान से दीपक बिचारा क्या करे ?
वह तो स्वयं जड़ रूप है, क्यों ज्ञान को पैदा करे ?
सच पूछिए तो इन्द्रियाँ भी, ज्ञान का कारण नहीं ।
ज्ञान के कर्ता कर्म करणादि सब हैं ज्ञान ही ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा |

कर्म तो जड़रूप हैं, परद्रव्य हैं, वे क्या करें ?
सब जीव निज अज्ञान से ही, घोर दुख भोगा करें ।
अतएव निज अज्ञान का ही, दहन करना चाहिए ।
परद्रव्य से तो सर्वथा, दृष्टि हटाना चाहिए ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा |

फल शुभाशुभ राग के सब, कटुक एवं त्याज्य हैं ।
मधुर फल वैराग्य है जो, ज्ञानियों को प्राप्य है ।
सब ज्ञानियों का भोज्य है प्रिय, आत्मज्ञान विराग फल ।
अज्ञानी सब निशदिन भखें शुभ-अशुभ भाव विभाव मल ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा |

जल फलादिक द्रव्य सब परद्रव्य एवं हेय हैं ।
हेय भी क्या वस्तुतः तो, ज्ञानियों के ज्ञेय हैं ।
इनसे नहीं है लाभ किंचित्, इन सभी को भूलिए।
अन-अर्घ्य निज चैतन्य निधि है नित्य उसमें झूलिए।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

(पंचकल्याणक)

गर्भ तो दुखरूप ही होता प्रभो
अर्घ्य क्यों उसको चढ़ाऊँ हे प्रभो ।
किन्तु कल्याणक बनाया आपने
द्वितीय कृष्ण वैशाख प्रभुजी आपने ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म तो संसार में सब ले रहे।
किन्तु जन्मों से रहित नहीं हो रहे ।
आपका तो जन्म कल्याणक हुआ।
पौष कृष्ण एकादशी के शुभ दिन हुआ ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दु:खरूप आरम्भ परिग्रह त्यागकर
बने मुनि प्रभु यथाजात गुण धार कर ।
पौष कृष्ण एकादशी पावन हो गई
हम सबको भी मुक्ति राह दिखला गई ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

निज आतम में लीन हुये ऐसे प्रभो
उपजा केवलज्ञान सहज ही हे प्रभो ।
चैत्र चतुर्थी कृष्ण पक्ष की थी प्रभो
वीतराग सर्वज्ञ रूप पाया अहो ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

घाति अघाति कर्म सभी अब नश गये
सम्यक्त्वादिक सभी आत्मगुण खिल गये ।
श्रावण शुक्ला सप्तमि शुभ तिथि आ गई
अनंत काल को मुक्ति लक्ष्मी मिल गई ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पार्श्वनाथ जिनराज की, महिमा अपरम्पार |
जो सम्यक् समझे उसे, उसका बेड़ा पार ||

(पद्धरि)

पार्श्वनाथ के पार्श्व में आओ | कमठ वृत्ति सब दूर भगाओ ||
सप्त व्यसन को छोड़ो भाई | अष्ट मूलगुण धारो भाई ||
सप्त तत्त्व को जानो भाई | नव पदार्थ पहचानो भाई |
षट् द्रव्यों को जानो भाई | पंच अस्तिकाया है भाई ||
क्रोधादिक कषाय चउ तजिए | पांचों पाप भाव परिहरिए ||
षट् आवश्यक पालन करिये | जिनपूजा गुरुसेवा धरिए ||
पंच अंग स्वाध्याय करीजे | द्वादश विध संयम आदरिए ||
द्वादश विध तप अमृत समझो | चार दान की महिमा समझो ||
सम्यग्दर्शन रत्न गहीजे | अष्ट अंग के संग गहीजे ||
सम्यग्ज्ञान पंचविध लहिए | तेरह सम्यक् चारित धरिए ||
ये सब पार्श्वनाथ ने गाया | उनका सबको ज्ञान कराया ||
ज्ञानिजनों ने वह अपनाया | मोक्ष सहज जीवन में आया ||

पार्श्वनाथ उपदेश को, लिया हृदय में धार ||
दुःख मिटा आनन्द मिला, वन्दन बारम्बार ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

सब जीव नित धारण करें, समता के इस आनन्द को |
नहीं दुखी कोई हो कभी, तज दे सभी क्रोधादि को ||
जगत मंगलरूप ही है, नहीं दुःख की बात कुछ |
ज्ञाता रहो दृष्टा रहो बस, राग-द्वेष करो न कुछ ||

इत्याशीर्वादः | पुष्पांजलिं क्षिपेत् |